



E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
IJH 2019; 1(1): 68-71
Received: 09-06-2019
Accepted: 25-07-2019

डॉ. करन

शोधार्थी इतिहास विभाग,
ल०ना०मि० विश्वविद्यालय, दरभंगा,
बिहार, भारत

आधुनिक समाज में डॉ० भीमराव अम्बेडकर के धार्मिक विचारधाराओं का अध्ययन

डॉ. करन

DOI: <https://doi.org/10.22271/27069109.2019.v1.i1a.63>

प्रस्तावना :

धर्म का समाजशास्त्र बृहत्तर विज्ञान समाजशास्त्र की एक शाखा है जो कि सामाजिक संदर्भ में धर्म का अध्ययन करता है। समाजशास्त्र की इस शाखा का विकास बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुआ था। इससे संबंधित विचार यूरोपियन विद्वानों के मस्तिष्क की उपज थी, जिसका पूर्ण विकास अमेरिकन पर्यावरण में हुआ है परन्तु इस विकास के दौरान मूल विचारों में अनेक परिवर्तन व परिवर्द्धन होते रहे हैं। स्मरण रहे कि धर्म का संबंध किसी न किसी प्रकार की अलौकिक शक्ति के कार्य-कलापों से था उसके चमत्कारों का अध्ययन नहीं है अपितु धर्म का सामाजिक जीवन में क्या स्थान है, इस बात का वैज्ञानिक अध्ययन करना ही धर्म के समाजशास्त्र का वास्तविक कार्य है। धर्म का समाजशास्त्र के प्रति हमारे कुसंस्कार या अन्धविश्वासयुक्त दृष्टिकोण को वैज्ञानिक आधारों पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास करता है जिससे कि धर्म के संबंध में कुछ वास्तविक ज्ञान प्राप्त हो सके और उस ज्ञान का प्रयोग समाज के लोग अपने सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति या समस्याओं को हल करने में कर सकें। उक्त मापदण्डों के आधार पर डॉ. अम्बेडकर ने धर्म के समाजशास्त्र के चिन्तन की नींव रखी। धर्म को मानव समाज के लिए अनिवार्य मानते थे परन्तु "जो धर्म मनुष्यों में भेद करता हो, जो करोड़ों धर्मावलंबियों से कुत्ते तथा अपराधियों की तरह दुर्व्यवहार करता हो तथा असहनीय अयोग्यताएं उन पर थोपता हो उसे वह धर्म नहीं मानते थे। धर्म कभी भी अन्याय व्यवस्था नहीं करता तथा धर्म तथा गुलामी कभी साथ-साथ नहीं चलते यदि तुम कहो कि तुम्हारा धर्म है तो हमारे अधिकार और हम समान हो। पर क्या मामला ऐसा है? यदि नहीं, तो किसी आधार पर तुम कहते हो कि हम हिन्दू बने रहे, बावजूद इसके कि तुम्हें ठोकरे मारी जाये" ऐसा डॉ. अम्बेडकर दलितों से कहते थे।¹..... मैं तुम्हें बताता हूँ, धर्म आदमी के लिए है न कि आदमी धर्म के लिए। यदि तुम इस विश्व में संगठित रहना चाहते हो, बने रहना चाहते हो तथा सफल होना चाहते हो तो हिन्दू धर्म बदल दो। धर्म, जो तुम्हें मानव के रूप में पहचान नहीं देता, जो पीने का पानी नहीं देता, मंदिर में घुसने नहीं देता, वह धर्म नहीं सजा है। जो धर्म तुम्हें शिक्षित होने से रोकता है और तो भौतिक विकास करने से रोकता है, वह किसी भी लायक नहीं।²..... जो धर्म अपने अनुयायियों को मानवता का व्यवहार करने अपने सधर्मियों के साथ नहीं पहुँचता तो वह धर्म नहीं शक्ति का प्रदर्शन है, जो धर्म अपने अनुकरण कर्ताओं को दुखी करता है, पशुओं को स्पर्श तथा मनुष्य को अस्पृश्य बताता है वह धर्म नहीं मानव उपहास है। जो धर्म कुछ वर्गों को शिक्षा, धन उपाजन का निषेध, रक्षा कवच न रखने को आज्ञा देता है, जो धर्म अज्ञान को अज्ञान रहने को बाध्य करता है और गरीब को और गरीब, वह धर्म नहीं वह तो मात्र दिखावा है। हिन्दू धर्म को परिवर्तन करने का मन बना लिया।

1. मैंने अपना धर्म बदलने का मन बना लिया है : अभी हमने यह तय नहीं किया है कि हम कौन सा धर्म अपनाएंगे, उनउपायों पर भी विचार नहीं किया है, जो हम ग्रहण करेंगे, परन्तु जो बात हम भली-भाँति तय कर चुके हैं, वह यह है कि हिन्दू हमारे लिए हितकारी नहीं हैं। यह बक्तव्य डॉ. अम्बेडकर ने ऐसोसियेटेड प्रेस के प्रतिनिधि द्वारा उनके नासिक भाषण पर गांधी जी की टिप्पणी बताये जाने पर दिया। 'असमानता', उन्होंने कह, "इसका प्रमुख आधार है और इसका नीतिशास्त्र ऐसा है कि दलित वर्गों को उनकी समग्र मानवता कभी नहीं प्राप्त हो सकती। किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि मैंने झुंझलाहट में या दलित वर्गों के साथ कविटो या अन्य किसी स्थान पर हुए अत्याचार के विरुद्ध शेष में यह किया। यह बहुत गहराई से सोचा हुआ निर्णय है मैं गांधी जी की इस बात से सहमत हूँ कि धर्म आवश्यक है, परन्तु इस बात से सहमत नहीं हूँ कि आदमी यह जानने के बाद भी उस पैतृक धर्म को अपनाये रहे कि वह इसके उन धार्मिक विश्वासों के सर्वथा विरुद्ध है, जिनकी उसे अपने निजी आचार-विचार के निर्धारण के लिए आवश्यकता है और जो उसकी प्रगति तथा कल्याण का प्रेरणाश्रोत है।

Corresponding Author:

डॉ. करन

शोधार्थी इतिहास विभाग,
ल०ना०मि० विश्वविद्यालय, दरभंगा,
बिहार, भारत

2. धर्मान्तरण में हरिजनों के अधिकार प्रभावित नहीं : "डॉ. अम्बेडकर ने घोषणा की, कि पूना समझौते के अर्न्तगत दलित वर्गों को जो राजनैतिक सुविधाएं प्राप्त हुई हैं, वे उनके द्वारा हिन्दू धर्म छोड़ने की स्थिति में समरत नहीं होगी। उनका मानना है कि उन्हें तथा उनकी पार्टी को चुनाव लड़ने से भयभीत करने के लिए यह कांग्रेसियों का राजनीतिक हथकाण्डा है।"
3. धर्मान्तरण की आवश्यकता : "हमारी सभा विशेष रूप से बम्बई महा प्रान्तीय महार सम्मेलन द्वारा पारित किए गये धर्मान्तरण संबंधित प्रस्तावों का आप लोगों को स्मरण कराने के उद्देश्य से आयोजित की गई है। अतः यदि किसी को धर्मान्तरण विषय में कोई संदेह है तो निश्चित रूप से उसे पूछ लेना चाहिए।" जब कोई भी प्रश्न पूछने नहीं आया तो डॉ. अम्बेडकर ने अपना भाषण जारी किया। उन्होंने कहा, "प्यारे भाइयों और बहिनो, मैं इस सभा में भाग लेने वाला नहीं था। परन्तु मुझे मालूम हुआ कि कुछ लोग ऐसे हैं, जो प्राचीन परम्पराओं से चिपके हैं और धर्मान्तरण संबंधी उस प्रस्ताव को पूरी तर कार्यान्वित नहीं करते हैं जो महार सम्मेलन में पारित हुआ था। इसलिए मैं ऐसे लोगों की शंकाएँ दूर करने के लिए यहां आया हूँ। मैं बहुत पहले इस विषय पर उनके बार अपने विचार व्यक्त कर चुका हूँ। मैं बहुत पहले इस विषय पर अनेक बार अपने विचार व्यक्त कर चुका हूँ। अतः वास्तव में आपको अपने दिमागों में कोई भी शंका नहीं रखनी चाहिए 1935 में जो बम्बई महाप्रान्तीय महार सम्मेलन आयोजित हुआ था वह महार समुदाय के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य हैं। इसलिए उस सम्मेलन द्वारा पारित किए गये प्रस्तावों का वस्तुतः सम्पूर्ण महार समुदाय को पालन करना होगा और महार समुदाय के सदस्यों को बहुमत से उन प्रस्तावों को कार्यान्वित करना होगा।" डॉ. अम्बेडकर ने कहा, "हमें उन सभी धार्मिक त्योहारों और दिवसों को मानना छोड़ देना चाहिए जिन्हें उन सभी धार्मिक त्योहारों और दिवसों को मानना छोड़ देना चाहिए जिन्हें हिन्दू धर्म के अनुसार मनाते आये हैं।" उन्होंने अपने भाषण के अन्त में कहा कि, "कुछ लोगों की यह राय है। कि धर्मान्तरण की लहर अब शान्त हो गई है। किन्तु ऐसा नहीं है, धर्मान्तरण अवश्य किया जाता है यह अच्छी तरह समझते कि इस आन्दोलन को समाप्त नहीं किया है। बहुत से हिन्दू मुझ से कहते हैं कि आपके धर्मान्तरण आन्दोलन से परिणाम स्वरूप हमारी आंखें खुल गई हैं। अब हम इतने जागरूक हो गये हैं कि आपके प्रति अपने कर्तव्य में अब असफल नहीं होंगे इसलिए आप अपने धर्मान्तरण आन्दोलन को वापिस ले लो। परन्तु मैं उन्ही कारणों से इस आन्दोलन को वापिस लेने के लिए तैयार नहीं हूँ जिन्हें मैं अब बता चुका हूँ अच्छी तरह से सोचो, जो नया धर्म ग्रहण करना है, वह केवल सूक्ष्म परीक्षण के बाद ही ग्रहण किया जाना चाहिए। मुझे आशा है कि इसके बाद महार समुदाय के सभी सदस्य उस पद्धति से कार्य करेंगे जो महार सम्मेलन में तय किया गया।"
4. अनुसूचित जातियाँ हिन्दू धर्म छोड़ दें : यह डॉ. अम्बेडकर की दृढ़ धारणा थी जिसको (दि फ्री प्रेस जर्नल, दिनांक 1 फरवरी, 1944) में प्रकाशित किया।

हिन्दू धर्म दुखों का मूल:

डॉ. अम्बेडकर ने लोगों से दो हजार वर्षों के लम्बे समय से उनके दुखों के कारण पर विचार करने को कहा। उन्होंने जोर देकर कहा कि इसका मुख्य कारण हिन्दू धर्म है। दुनिया के तमाम धर्मों में सिर्फ हिन्दू धर्म ही है, जो जाति, भेद और अस्पृश्यता को मानता है। सवर्ण हिन्दुओं द्वारा अनुसूचित जातियों पर होने वाले

सम्पूर्ण अन्यायों का यही एक आधार है। उन्होंने दुख के साथ कहा कि आज भी स्थिति यह है कि गाँवों में वे आत्मसम्मान के साथ जी नहीं सकते

इसलिए उन्होंने अपना दृढ़ मत दुहराया कि उन्हें धर्म छोड़ देना चाहिए तथा लम्बे समय तक अपमान का जीवन जीने से इन्कार कर देना चाहिए। उन्हें जिस चीज से सर्वाधिक आक्रान्त है, वह यह है कि उनका समुदाय अभी भी अपमान की स्थिति को स्वीकार किये हुए है, और ऐसा इसलिए है, क्योंकि स्वर्ण हिन्दुओं ने उनको इतना अधिक दबाया है कि उनका आत्मसम्मान समाप्त हो गया है। उन्होंने लोगों से अपनी निजी शक्ति पर भरोशा करने और उस धारणा पीछा छोड़ने का आह्वान किया जो दूसरे समुदाय से किसी भी प्रकार से उन्हें हीन बनाये हुए हैं।

5. अम्बेडकर बौद्धधर्म ग्रहण करेंगे : हरिजनों से भी अनुसरण करने की अपील (बारह धर्मदीक्षाएं आज दिल्ली में 'भारत' दिनांक 3 मई 1950) हमने विशेष प्रतिनिधि द्वारा आज रात राजधानी में सम्पूर्ण दक्षिण-पूर्व एशिया में विशाल राष्ट्रीय महत्व और हित की प्रभावशाली घटना उस समय घटित हुई जब भारत के विधिमन्त्री डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने भगवान बुद्ध की त्रिपक्षीय समारोह में विशाल सभा में बोलते हुए छः करोड़ हरिजनों से बौद्ध धर्म ग्रहण करने का आह्वान किया।

बाद में, डॉ. अम्बेडकर ने 'भारत' के प्रतिनिधि को बताया कि बौद्ध धर्म अपनाने वाले हैं, सभी में श्रीमती अम्बेडकर भी उपस्थित थी। यह भी अधिकृत रूप से पता चला है कि ऐसे ही निर्देश सम्पूर्ण भारत में डॉ. अम्बेडकर के अनुयायियों को भेजे गये हैं। कल वास्तव में भगवान बुद्ध के जन्म, निर्वाण और मृत्यु का दिवस था। डॉ. अम्बेडकर ने कल सीनीय बिहल में जाकर भगवान बुद्ध के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की।

प्रधान बौद्ध भिक्षु के अनुसार डॉ. अम्बेडकर ने प्रार्थना की 'बुद्धम् शरणम् गच्छामि धर्मम् शरणम् गच्छामि संघम् शरणम् गच्छामि।' 'उन्होंने बौद्ध धर्म के पाँच सिद्धांतों (पंचशील) को भी स्वीकार किया और सामान्यतः सभी की व्याख्या की।

बौद्ध पुनर्जागरण:

एक प्रतिष्ठित बौद्ध भिक्षु ने जो उस समय उपस्थित थे। जब डॉ. अम्बेडकर अपना भाषण दे रहे थे कहा कि भारत ने अब स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है। अतः बौद्ध धर्म को अपनी भूमि पर आना चाहिए। भारत में साम्भव्य बौद्ध पुनर्जागरण के राजनैतिक महत्व पर बल देते हुए उन्होंने घोषणा की कि भारत को अपनी स्वतंत्रता और आध्यात्मिक शक्ति की रक्षा के लिए बौद्ध धर्म की आवश्यकता है।

डॉ. अम्बेडकर ने, शुद्ध हिन्दी में अपने तीस मिनट के भाषण में, दावे के साथ कहा कि भारत में बौद्ध पुनर्जागरण एक बार हो चुका है। उन्होंने इस दावे का समर्थन यह बताकर किया कि गणतंत्र के राष्ट्रपति के पास स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय ध्वज में अशोक चक्र बौद्ध धर्म से ही पहुँचा है, 'ब्राह्मण धर्म' से कुछ भी प्राप्त नहीं किया है। बौद्ध धर्म पुनः गणराज्य के सामने तीन शेरों के प्रतिक के रूप में आया और जब गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति को शपथ दिलायी गयी तो उस ऐतिहासिक अवसर पर ही हिन्दू देवी-देवता की प्रतिमा को नहीं, बल्कि बुद्ध को प्रतिष्ठित किया गया था। उन्होंने कहा कि वास्तव में भगवान बुद्ध से कोई ईश्वर मेल नहीं खाता, राम और कृष्ण। डॉ. अम्बेडकर ने घोषणा की कि उनसे बड़ा ऋषि और नायक कोई पैदा नहीं होगा।

डॉ. अम्बेडकर ने रामायण और महाभारत से कुछ दृष्टान्त प्रस्तुत किये और रामचन्द्र तथा भगवान कृष्ण की महानता पर प्रश्नचिन्ह लगाया "जिन पर महानता थोपी गयी है।" उन्होंने कहा, हिन्दू धर्म ने सत्य का दोहरा सिद्धांत प्रस्तुत किया और उस धर्मान्यता को

प्रस्तुत किया, जिसने विवादों को टालने और अपनी अखण्ड प्रधानता को कायम रखने का प्रयास किया। उन्होंने पूछा, कैसे यह धर्म इन करोड़ों लोगों को प्रिय हो सकता है जिन पर निरन्तर दण्डाज्ञा की गई है। उन्होंने घोषणा की कि समय आ गया है, जब धर्म को पिता के पुत्र को प्राप्त वस्तुओं और चल सम्पत्ति की तरह वंशानुगत नहीं होना चाहिए, अपितु निजी स्वीकृति से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति द्वारा बौद्धिक रूप से जांचा-परखा जाना चाहिए।

डॉ. अम्बेडकर ने स्पष्ट किया कि समाजवादियों और कम्युनिस्टों की तरह इस बात में विश्वास नहीं करते कि धर्म अनावश्यक है उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा, "मैं मानता हूँ कि धर्म मानव जाति के लिए आवश्यक है। जब धर्म का अन्त होगा तो समाज भी नष्ट हो जायेगा। कोई भी सरकार मानव जाति को उतना सुरक्षित और अनुशासित नहीं रख सकती, जितना 'नीति' अथवा धर्म रख सकता है।"

धर्म परिवर्तन की घोषणा :

1935 में जब यह समाचार फैला कि डॉक्टर साहब होने वाली येवला कांफ्रेंस में धर्म परिवर्तन की एक अपूर्व घोषणा करने वाले हैं तो सारे देश में एक खलबली मच गई। इस कॉन्फ्रेंस में डॉक्टर साहब ने हिन्दुओं की बेतुकी और अनैतिक वर्णव्यवस्था (जात-पात) की घोर निन्दा की। उन्होंने कहा जो धर्म हमें मानवता के मूल अधिकार देने से वंचित रखता है हमारे लिए यह आवश्यक हो जाता है कि हम ऐसे अधर्म के साथ चिपके न रहें। अपने बारों में उन्होंने कहा कि मैं 'हिन्दू धर्म' में पैदा हो गया यह मेरे अपने वंश की बात नहीं थी किन्तु मैं हिन्दू रहकर मरूँगा नहीं यह अपने वंश की बात है।

उनकी यह प्रतिज्ञा एक प्रकार की भविष्यवाणी ही सिद्ध हुई क्योंकि अपने परिनिर्वाण से लगभग सात सप्ताह पहले अर्थात् 14 अक्टूबर 1956 का उन्होंने नागपुर में बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था।

1935 के धर्म परिवर्तन की घोषणा से सारे देश में अजीब सनसनी फैल गई थी। मुस्लिमों ने उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए और ईसाईयों ने ईसाई धर्म दीक्षित होने के लिए निमंत्रण दिये। कुछ दिनों के पश्चात् उन्होंने कहा कि वह इस्लाम और ईसाई धर्म की अपेक्षा सिक्ख धर्म को स्वीकार करने में प्राथमिकता देंगे। सवर्ण हिन्दुओं में काफी समय तक चर्चा होती रही। गांधी जी ने व्यंग्य भाषा में कहा कि अछूत दूसरा धर्म स्वीकार करेंगे या नहीं किन्तु डॉक्टर अम्बेडकर इस घोषणा से अवश्य प्रसिद्ध हो जायेंगे। पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त ने बयान दिया कि धर्म परिवर्तन करने से पूना पैक्ट रद्द हो जाएगा और अछूत सब अधिकारों से वंचित हो जायेंगे। डॉक्टर साहब ने ऐसे तमाम नेताओं की आपत्तियों का युक्ति-युक्त और मुंहतोड़ उत्तर दिया।

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर के धार्मिक मन्तव्य :

बाबा साहब ने अपनी उच्च शिक्षा अमरीका, इंग्लैण्ड और जर्मनी में प्राप्त की थी। वह समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, कानूनशास्त्र और इतिहास शास्त्र के पण्डित थे। इतना होने पर भी उनका धर्म में अटूट विश्वास था। आजकल के युग में विश्वविद्यालय तक पहुँचने तक विद्यार्थी प्रायः धर्म को तिलांजलि दे देते हैं किन्तु इस महापुरुष में इतनी शिक्षा होने पर भी धर्म की भावना मौजूद थी। वह धर्म को मनुष्य के लिए अनिवार्य समझते थे। उनके विचार में धर्म से विहीन न तो पूर्ण व्यक्ति बन सकता है और न ही धर्म रहित समाज या सोसाइटी आदर्श रूप ग्रहण कर सकती है। प्रश्न उठता है कि वह किस प्रकार के धर्म के स्वयं अनुयायी थे और उसे मानवता के लिए अनिवार्य समझते थे। इस तथ्य को समझने के लिए पहले यह विवेचन करना जरूरी है कि उनके मत में धर्म

के लक्षण या स्वरूप क्या हैं ?

वह धर्म और मजहब में बड़ा भेद समझते हैं। संसार भर के प्रसिद्ध विश्वासों या मन्तव्यों को वह मजहबों धर्म की कोटि में रखते हैं और उन्हें धर्म की परिभाषा से पृथक् मानते हैं। जिस धर्म को वह मानव मात्र के कल्याण का मुख्य साधन मानते हैं, वह है विशुद्ध नैतिकता ; उद्वर्तनसपजलद्ध जिसे उर्दू फारसी में इखलाक कहा गया है। इसे वे धम्म की श्रेणी में रखते हैं।

धर्म और धम्म के अंतर को बाबा साहब ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ बुद्ध और उनका धम्म ; ठनककी दक भ्ये कीउउंद्ध में विस्तारपूर्वक समझाया है। हमें इस विषय पर इससे बढ़िया विस्तारपूर्वक विवेचना कहीं दूसरे किसी धार्मिक ग्रन्थ या पुस्तक में नहीं मिलती। हम उचित सतझते हैं कि धम्म के विषय पर उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ से हूबहू वह उद्वरण नकल कर लिए जाएं ताकि पाठकों को भली भांति पता चल सके कि बाबा साहब की दृष्टि में धर्म और धम्म में क्या अंतर है और मानव मात्र के लिए धर्म की बजाए धम्म ही कल्याणकारी क्यों हैं।

पूर्वोक्त विचारों को मनन करते हुए हम डॉ. अम्बेडकर के धार्मिक दृष्टिकोण को भली-भांति समझ सकते हैं कि वह धम्म को नैतिकता का पर्यायवाची मानते हैं। उनके विचार में वही धम्म ग्राह्य और अनुकरणीय है जो मानवमात्र को नैतिकता की शिक्षा देता है और मानवमात्र को परस्पर समता की भूमि प्रदान करता है। जो ब्राह्म कर्म काण्ड और आडम्बरो को नैतिकता की कोटि में नहीं लाता। जो प्रज्ञा करुणा और मैत्र का पाठ पढ़ाता है। मानवमात्र ही नहीं प्राणीमात्र से भी सहानुभूति करना सिखाता है असहाय जीवनों पर दया करना सिखाता है।

उनकी इस कसौटी पर केवल भगवान बुद्ध का दिखाया धम्म का सन्मार्ग एक मात्रा ऐसा सही और निभ्रान्त सन्मार्ग है जो मानवमात्र के लिए कल्याणकारी और सुखदायक है। इसी मार्ग को जिसे भगवान बुद्ध ने बहुजन हिताय बहुजन सुखाय कहा है, उसे वह स्वयं मानते थे और अन्य लोगों को उसे अपनाते के लिए उपदेश देते थे। उनके विचार में भगवान बुद्ध द्वारा दर्शाया यह उत्तम सन्मार्ग व्यक्ति और समिष्टि, के लिए उपादेय है। इस मार्ग को अपनाते से न केवल भारतीय अद्वैतों का बल्कि समस्त भारत का कल्याण हो सकता है। बाबा साहब का दृढ़ विश्वास था कि आज के भयानक परमाणु और उदजन बमों की विभीषिका से मानवमात्र का छुटकारा तब तक नहीं हो सकेगा जब तक वह भगवान बुद्ध के इस मध्यम मार्ग को नहीं ग्रहण करेंगे कि स्वयं जीयो किन्तु दूसरों को भी जीने दो। इसी धम्म को उन्होंने सारे संसार के सामने 14 अक्टूबर 1956 को अपनाया और अपने अनुयायियों को इसमें दीक्षित होने के लिए प्रेरणा दी। हम निःसंदेह कह सकते हैं कि बाबा साहब नैतिकता के प्रचारक, प्रसारक और विस्तारक बौद्ध धम्म के अनुयायी थे और इसी धम्म को न केवल अछूतों और मानवमात्र को अपनाते की शिक्षा देते थे।

निष्कर्ष:

- डॉ. अम्बेडकर की मान्यता थी कि व्यक्ति साध्य हैं धर्म साधन है। धर्म ने व्यक्ति को नहीं अपितु व्यक्ति ने धर्म का आविष्कार किया है। इसलिए धर्म को चाहिए कि वह उसका कल्याण करे तथा उसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करे ताकि वह अपनी धार्मिक समस्याओं का सरलता से हल ढूँढ सके।
- धर्म को डॉ. अम्बेडकर एक सामाजिक घटना के रूप में स्वीकार करते हैं। विश्व में ऐसा कोई समाज नहीं जिसमें रहने वाले जन किसी धर्म को नहीं मानते। वे धर्म को मनुष्य के लिए अनिवार्य मानते हैं क्योंकि धर्म मनुष्य को यथार्थ में मानव बनाता है।
- जो साम्यवादी धर्म को अफीम का नशा बताते हैं उनकी डॉ. अम्बेडकर आलोचना करते हैं कि बिना धर्म पालन के विश्व

की अर्थव्यवस्था समानता, न्याय, स्वतंत्रता तथा बन्धुत्व का आविर्भाव नहीं कर सकती।

- डॉ. अम्बेडकर उस धर्म में विश्वास नहीं करते जो मानव मात्र में भेद करता है, पूजा में विश्वास करता है, व्यक्ति को ईश्वर मानता है तथा जातिवाद में विश्वास करता है।
- डॉ. अम्बेडकर धर्म को नैतिकता के रूप में स्वीकार करते हैं जो सारभौमिक रूप से सत्य है।
- अहिंसा का पालन, झूठ बोलने से, मद्यपान से, पर स्त्रीगमन से विरत रहने के पालन को डॉ. अम्बेडकर धर्म पालन मानते थे।
- डॉ. अम्बेडकर धर्म का आध्यात्मिक स्वास्थ्यमय मानव व्यवहार मानते हैं जो शांति एवं प्रगति को लाकर समाज का संतुलन बनाये रखता है।
- डॉ. अम्बेडकर कुशल कर्मों के पालन को धर्म स्वीकार करते हैं जिनके निष्पादन से व्यक्ति का (कर्ता) के रूप में तथा समाज का कल्याण सुनिश्चित होता है।
- डॉ. अम्बेडकर धर्म को सामाजिक कनयंत्रण का एक शक्तिशाली यंत्र तथा विधि निर्माण का महानतम स्रोत मानते हैं।
- मानव का मानव के साथ व्यवहार में समानता, स्वतंत्रता, न्याय तथा बन्धुत्व को धर्म की संज्ञा प्रदान करते हैं।
- सभी तरह की व्यवस्था, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा प्रशासन के लिए धर्म पालन (कार्य एवं उत्तरदायित्वों को निर्वाहन) समय की पाबन्दी, कार्य में निष्ठा तथा व्यवहार में ईमानदारी को धर्म मानते हैं।
- जो धर्म अपने अनुयायियों पर मानवता का व्यवहार करने अपने सधर्मियों के साथ नहीं पहुँचता तो वह धर्म नहीं शक्ति का प्रदर्शन है, जो धर्म को अस्पृश्य बताता है वह धर्म नहीं मानव उपहास है। जो धर्म कुंद वर्गों को शिक्षा, धन उपार्जन का निषेध रक्षा कवच न रखने को आज्ञा देता है, जो धर्म अज्ञान को अज्ञान रहने को बाध्य करता है और गरीब को और गरीब, वह धर्म नहीं वह तो मात्र दिखावा है।
- डॉ. अम्बेडकर हिन्दू वर्ण व्यवस्था को श्रम विभाजन मानने को अस्वीकृति करते हुए घोर आलोचना करते हैं क्योंकि वर्ण व्यवस्था शूद्रों को वर्ण बदलकर जीविका उपार्जन की अनुमति नहीं देती। वर्ण व्यवस्था जिसमें जो पैदा हुआ है उसी में जीये-मरे पर ऊपर न उठे।
- डॉ. अम्बेडकर धर्म के नाम पर किसी तरह का आडम्बर स्वीकार नहीं करते थे वे प्रगति के लिए चिन्तनशीलता, कर्तव्य परायणता तथा सामाजिक व्याधिकी को दूर करने के कार्यों को करने हेतु धर्म को प्रेरित मानते थे।
- डॉ. अम्बेडकर 'अत्तदीयो भव' की अवधारणा में विश्वास करते थे। उनकी मान्यता थी कि व्यक्ति की या समाज को अपनी समस्याओं को स्वयं निदान कर, हल ढूँढ कर उपचार करना चाहिए। उन्हें कोई परलौकिक शक्ति हल करने नहीं आयेगी। इस प्रकार वे भाग्यवाद के विरोधी थे।
- डॉ. अम्बेडकर को बुद्ध की उस वाणी में अत्याधिक विश्वास था कि किसी विचार को इसलिए मत मानो कि धर्म ग्रन्थों में लिखी है अथवा अनेक लोग किसी विशेष वाणी में विश्वास करते हैं अथवा सदियों से लोग उसे मानते आ रहे हैं। उस विचार को मानो जिसके मानने से व्यक्ति का तथा समाज का कल्याण होता है।
- डॉ. अम्बेडकर की मान्यता थी कि व्यक्ति साध्य है। धर्म साधन है। धर्म ने व्यक्ति को नहीं अपितु व्यक्ति ने धर्म का आविष्कार किया है इसलिए धर्म को चाहिए कि वह उसका कल्याण करे तथा उसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करे ताकि वह अपनी धार्मिक समस्याओं का सरलता से हल ढूँढ सके।

संदर्भ:-

1. चेस्टर, एल हन्ट (1960:539): 'सोशियोलोजी आफ रिजीजन' इन कन्टेम्परेरी सोशियोलोजी, एडीटेड बाई जे. एस. रॉकी पीटर, ओविन लिमिटेड, लंदन
2. धनंजय कीर (1962): लाइफ एण्ड मिशन, पृष्ठ-209
3. धनंजय कीर (1962): लाइफ एण्ड मिशन, पृष्ठ-210
4. धनंजय कीर (1962): लाइफ एण्ड मिशन, पृष्ठ-211
5. धनंजय कीर (1962): लाइफ एण्ड मिशन, पृष्ठ-212
6. छ: बॉम्बे क्रॉनिकल, दिनांक 16 अक्टूबर, 1935
7. मांग पत्र (1938): औरियंटल ट्रान्सलेशन कार्यालय, सचिवालय बम्बई।